'নাम् — पातियत्वा पदा 'वधीत् • 2) occidere. R. Schl. I. 2. 18.: क्रीञ्चिमयुनाद् एकम् अवधीः; Ман. 1. 4801.: प्रक्राञ्चया महाबाङ्गस् तान् विधिष्यति; 3. 626.: तं विधिष्ये महोतले (Cf. १६, व्यध्, वाध्, बाध्, lat. laedo (v. Benary p. 49.); hib. faethaim «I kill», faethadh «killing», fesaim «I kill, destroy», feadhm «a battle».) c. नि occidere. Ман. 1. 4121, 5472.

ਕਬ ਆ. (r. ਕਬੂ s. ਜ਼, scribitur etiam ਕਬ) caedes. H. 1. 46. 3. 20. Br. 2. 30.

নিধু f. (scribitur etiam ভ্রম্, fortasse a r. ভ্রম্) 1) femina, etiam animalium femina. Dr. 1.17. 2) nurus. SA. 4. 28. 6.9. 3) femina affinis, fratria. Su. 4.15. (Hib. badhbh «an ill-inclined woman; a witch, a fary woman».)

লটাতিন (e লঘ caedes et তৃতিন cupidus) caedendi cupidus. Sv. 2.19.

ਕध्यता f. (a वध्य occidendus s. ता) status ejus, qui occidendus est. N.9.8.

1. वर्न 1. P. (हिंसायाम к.) ferire, laedere. (V. 3. वर्न et cf. हर्न e धन्, hib. bana «death»; gr. φένω, φόνος, φονεύς; lat. fûnus; v. 4. वर्न.)

2. वन् 1. p. (सम्भत्ता k. सम्भतिशब्दया: v.) colere, venerari, deditum esse, amare; sonare (cf. स्वन्).

— In dial. Vêd. 1) dare. RIGV. V. 47.1.: इन्द्रपानं वा वनेम (v. Westerg.). Etiam cl. 2. a. RIGV. V. 17.5.: वंस्व वार्याणि. 2) accipere. RIGV. V. 94.9.: यद् ईमिल तद् वनेमहि; RIGV. 3. 2. 93. 9. 46. 14. (V. विनित्ता et cf. lat. veneror, Ven-us; germ. vet. wini dilectus, amicus; winia dilecta, marita, uxor; wunna gaudium, voluptas; fortasse minna amor e winna.)

3. वन् 8. म. л. (याचने) petere, cupere. — In dial. Ved.
1) id. Rigv. 31. 13.: मल्लम् मनसा वनोषि
2) praef. म्रिम colere (v. 2. वन्). Rigv. 51.2.: म्रिमी
"म् स्रवन्वन्त् स्विभिष्टिम् उत्तयः "illum colebant fauste aggredientem opitulatores". 3) occidere, perdere,
(v. 1. वन्). Rigv. 121.9.: वन्वज् कुष्णम् (वन्वन्
यु°) स्रनन्तैः परियासि वधैः; 73.9.: नृभिन्न नृन् वीरैन्न वीरान् वनुयामाः

4. वन् 1. et 10. p. (वनामि, वानयामि (उपकृता रू. उपकृती अद्याघाते शब्दीपतापयो: p.) juvare; credere; ferire; sonare; vexare. (V. 1. et 3. वन् et cf. 2. तन्; hib. banaim = वनामि, banaighim = वानयामि «to waste, to pillage, to plunder»; v. etiam banadh, banaghadh apud O'Reilly.)

অন n. 1) silva. H. 1.3. 2) aqua. Am.

অন্যারি et ^o্যারা f. (e অন et ্যারি, ্যারা quae hac in compositione regionem significare videntur) silvae regio (?). Dr. 1.2. SAK. 27.6. infr.

ਕਜਦਾਰਿ m. (e ਕਜ et प्रति dominus, inserto ਜ਼ euphonico) arbor. H. 1. 11.

বনিনা f. (part. pass. rad. বন amare) femina; uxor. Ur. 37.10. MEGH. 8. 33. 59. 65. (Germ. vet. winia dilecta, uxor, v. 2. বন; hib. ban «a woman».)

वन्द् 1. A. interdum P. (scribitur वर्, gr. 110°).) 1) se inclinare reverentiae causa, inclinato corpore salutare. Dr. 9.19.: ववन्दे ... मुनिम्; A.1.5.: वृकोद्रस्या 'पि ववन्द पादै।; 2.: गुधिष्ठिरम्... अवन्द्त; MAH. 2.23.: ववन्दे चरणा मूर्धा ... पितृष्ठसुः (v. 2. वद् praef. अभि). 2) laudare, celebrare. R. Schl. II. 16.37.: रामम् ... वचोभिर् अग्र्यैः ... ववन्दिरे (Fortasse lat. laus, laud-is mutato v in l, n in u, v. gr. comp. 20. 255.9.)

^{c.} म्रिभ *i. q. simpl.* sgnf. 1. R. ed. Ser. I. 28.34.: राघवाव् म्रभ्यवन्दताम्

с. सम् іа. Ман. 1. 5420.: तम् ... शिरसा समवन्दतः

वान्दि et वन्दो f. captivus; v. sq.

वन्दोकः (e praec. et कः, v. gr. 653.) capere, rapere. Un. 2. 5.: वन्दोक्तता विद्यधशत्रुभिः

অন্থিন m. (r. অন্থ s. হন্) laudator, praedicator, praeco. UR. 59.16.

वप् 1. P. A. (उप् gr. 455. 481. 505. 613. 632.) 1) spargere, praesertim semen, seminare. MAN. 3.142.: वीजम् उप्ताः 9.36.: यादशन् त् 'प्यते वीजम् ; 9.40.: म्रन्यद् उप्ताः जातम् म्रन्यत् — म्रज्ञान् वसुम् talos jacere. MAH. 2.2033. 2) texere. (Cf. व्या flare, वे texere et Causalia